Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

Original Article

नारी-विमर्ष की अवधारणा और अस्मिता का स्वरूप

गीता कुमारी[1], डॉ. सुरेश कुमार निराला[2]

[1]शोधछात्रा, मानविकी संकाय (हिन्दी)भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय लालूनगर, मधेपुरा

[2]सहायक प्रोफेसर,हिन्दी विभागाध्यक्ष एच. पी. एस. कॉलेज निर्मली,

सुपौल भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय लालूनगर, मधेपुरा।

Email: gitasitamarhi98@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2026-180140
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 1(A)
Pp. 199-201
January - 2026
Submitted: 18 Dec. 2025
Revised: 28 Dec. 2025
Accepted: 13 Jan. 2026
Published: 31 Jan. 2026

शोध सारांश

भारतीय समाज मे प्राचीन काल से ही नारी के प्रति शोषण एवं दमन होते आ रहे है। इस शोषण एवं दमन के विरूद्ध आंदोलन समय–समय पर होते रहे है। इन्ही आंदोलन ने नारी मन में चेतना उत्पन्न की और नारी–विमर्ष को जन्म दिया। नारी–विमर्ष एक ऐसा विमर्ष है जो समाज में व्याप्त पितृसत्तात्मक संरचना को पूर्णातः समाप्त करने की बात करते हुए नारी–पुरूष भेदभाव रहित सामाजिक संरचना की स्थापनाक करने हेतु अपनी आवाज बुलंद करती है। नारी विमर्ष या बहस का मुदा नहीं है चेतना और जाग्रति का मुद्धा है। इसमें परंपरा और आधुनिक दोनों है। नारी की विभिन्न समस्याएँ उनके अपने सवाल अपने अधिकार सब नारी विमर्ष के अंतर्गत शामिल है। नारी पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, शौक्षणिक एवं राजनीतिक प्रत्येक क्षेत्र मे अपनी उपस्थिति एवं योग्यता दर्ज करा कर समान अधिकार प्राप्त करना चाहती है। युग के साहित्य में नारी के स्वरूप में परिवर्तन आया है। साहित्यकारों ने समयानुसार नारी समस्याओं को अपनी रचनाओं में व्यक्त किया है और नारी समस्या निराकरण के सुझाव भी प्रस्तुत किये है। नारी विर्मष ने ही नारी के मन मे अस्मिता का भाव जागृत किया है। नारी विमर्ष ने ही नारीयों के मन में पुरूष समाज का विरोध करता है।

मुख्य शब्द :– *नारी विमर्ष, अस्मिता हिन्दी साहित्य, भारतीय समाज शोषण, संघर्ष,योगदान।*

प्रस्तावना

भारतीय समाज पितृसत्तात्मक है यहाँ पर स्त्री की स्थिति हमेषा दोयम दर्जे की रही है। आरंभ में स्त्री–पुरूष को समान दृष्टि से देखा गया था, लेकिन अपनी शारीरिक संरचना के कारण पुरूष ने धीरे–धीरे नारी पर अपना आधिपत्य जमा लिया। जहाँ पर आर्य काल वैदिक युग में स्त्री को आदर की दृष्टि से देखा गया तो मुसलमानों के आक्रमण के कारण वह घर की चार–दीवारों में कैद हो गई। यहीं तो स्त्री के दुर्भाग्य की कथा–आरंभ होती है। रीतिकाल में वह योग्य बन गई थी उसको केवल भोग–विलास की वस्तु माना जाता था, लेकिन आधुनिक काल में महापुरूषों के योगदान के कारण स्त्री की स्थिति में काफी सुधार हुआ है। पुरूष वर्चस्ववादी होता है वह अपना प्रभुत्व स्त्री पर बनाए रखना चाहता है। इसलिए वह तरह–तरह के प्रपंच रचकर स्त्री को खुली हवा में सांस नहीं लेने देना चाहता है आज हर जगह स्त्री हिंसा का षिकार हो रह हैं चाहे वह पढ़ी–लिखी हो अथवा अनपढ़। अनपढ़ जहाँ पर आर्थिक शोषण,यौन–शोषण आदि को सहन कर रही है। वहाँ पर पढ़ी–लिखी स्त्रियाँ मानसिक यंत्राण का षिकार हो रही हे। संविधान के बराबरी का दर्जा दिए जाने के बावजूद भी वह व्यावहारिक रूप से असमानता का षिकार है। इस प्रकार स्त्री ने जब भी अपना स्वतन्त्रा अस्तित्व निर्मित करना चाहा, समाज ने उसके साथ अमानवीय बर्ताव ही किया।

स्त्री विमर्ष की अवधारणा, स्वरूप एवं इतिहास

आज भले पूंजीवादी व्यवस्था मे स्त्रियो को घर की चार दीवारी से बाहर निकलने का अवसर मिल गया हो, परन्तु जहाँ अपने से बाहर निकलने का अवसर मिल गया हो, परन्तु जहाँ अपने जीवन के निर्णय लेने की बात है, उसकी स्थिति ज्यों–की–त्यों बनी हुई है। आज भी पुरूष ही उनकी भाग्य विधाता बना हुआ है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
गीता कुमारी, शोधछात्रा, मानविकी संकाय (हिन्दी)भूपेन्द्र नारायण मंडल विश्वविद्यालय लालूनगर, मधेपुरा

How to cite this article:
कुमारी, . गीता ., & निराला, . सुरेश . कुमार . (2026). नारी-विमर्ष की अवधारणा और अस्मिता का स्वरूप. Journal of Research & Development, 18(1(A)), 199–201. https://doi.org/10.5281/zenodo.18619640

Quick Response Code:

Website: https://jrdrvb.org/

DOI: 10.5281/zenodo.18619640

OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

स्त्री की पीड़ा, उसकी वेदना, उसका दर्द कहीं से भी कम नहीं हुए विमर्ष का विषय हो गया है।अतः सबसे पहले यह जानना आवष्यक है कि स्त्री विमर्ष क्या है?स्त्रियों से सम्बन्धित किसी समस्या या स्थिति को एक कोण से न देखकर भिन्न–भिन्न मानसिकताओं, दुष्टियों, संस्कारों और प्रतिबताओं को उलट–पलट कर देखना उसे समझने की कोषिष करना और पिफर मानवीय संदर्भों में उसे प्रतिष्ठित करना ही स्त्री विमर्ष है। स्त्री –विमर्ष बहुआयामी हैं। स्त्री विमर्ष ने साहित्य समाज तथा राजनीतिक की दुनिया में एक नई बहस को जन्म दिया है। पहली बार स्त्री–विमर्ष में ही इस वास्तविकता का रहस्योद्घाटन हुआ कि हमारे मानव –मूल्य, मानव –मूल्य न होकर पितृसत्तात्मक मूल्य हीहै। जो मूल्य पितृक हैं वे मानवीय कैसे हुए? जिनमें स्त्रियों के हितों की कोई सुरक्षा नहीं जहाँ स्त्री का मूल्यों के नाम पर खुला–दमन, उत्पीड़न है। इसी स्थिति को उलटने का श्रेय नस की महान लेखिका सीमोन द बोउवार को जाता है, जिन्होंने पितृसत्तात्मक समाज की आलोचना की और स्त्री–मुक्ति के लिए नए रास्ते खोले। पदमनकर्त्ता हमेषा दमित की जड़ों को काटता रहता है ताकि वह बौना ही रह जाए। पितृसत्तात्मक समाज ने हमेषा से स्त्री का शोषण किया है। उसे उसके अधिकारों से वंचित रखा है, ताकि वह पुरूष की बराबरी न कर सके।

उसके मानसिक, शारिरिक सामाजिक तथा सांस्कृतिक विकास में हमेषा बाधा ही पहुंचाई है। स्त्री को कभी पूरा विकास करने का अवसर ही नहीं दिया गया। स्त्री में क्षमता का अभाव नहीं है। वह किसी भी कार्य को आसानी से कर सकती हैं परन्तु उसे स्त्री समझकर कार्य–क्षमता दिखाने का अवसर ही नहीं दिया। इसका कारण उसका स्त्री होना नहीं, बल्कि यह समाज है जो स्त्री की सारी अभिव्यक्ति को नियंत्रित करता रहता है। महादेवी वर्मा 1942 में प्रकाषित 'श्रृखला की कड़ियाँ' ने भारतीय समाज की पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था में महिलाओं की दुर्दषा का बयान करती हैं और स्त्री–मुक्ति की बात करते हुए विकास के लिए उन्हें ज्ञान की परम्परा से जुड़ने की सलाह देती है। पितृसत्तात्मक समाज में स्त्री की अस्मिता कुछ होती ही नहीं है। स्त्री जब इस व्यवस्था को तोड़ने की कोषिष करती है, तो समाज के कायदे–कानून आड़े आ जाते है, लेकिन पुरूष को क्रांतिकारी कहकर सम्मान दिया जाता है। इस लिंग भेद की नीति से नए–नए अंतर्विरोध सामने आ रहे है। स्त्री–मुक्ति तभी सम्भव है जब उसके भीतर ज्ञान–चेतना जागृत हो, तभी वह अपनी अस्मिता का अहसास समाज को करा सकती है।

स्त्री विमर्ष का स्वरूप :–

प्राचीन भारतीय परम्परा में स्त्री को पुरूष की संगिनी माना गया है। वह हर कार्य में पुरूष के समान मानी जाती थी, वह किसी भी स्थिति में पुरूष से हीन नहीं थी। वह पुरूष के जीवन की मूलभूत आवष्यकता थी क्योंकि स्त्री के बिना पुरूष का कोई भी कार्य सम्पन्न नहीं होता किन्तु नारी की यह श्रेष्ठता सदैव बनी नहीं रही। समय के साथ–साथ उसकी स्थिति ह्रासोन्मुख होती रही। पितृसत्तात्मक समाजों में पुरूषों के पास स्त्रीयों की देह को उपभोग करने का पूरा अधिकार होता है। कोई भी स्त्री समाज में कितनी भी प्रतिभा सम्पन्न हो, लेकिन इसके साथ ही यदि वह पितृक नैतिकता का बहिष्कार करती है तो उसको सामाजिक अपमान झेलने पड़ते हैं।

आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक जिनती भी लड़ाईयाँ लड़ी गई, उनकी दारूणयंत्राण को स्त्री ने ही भोगा है। अर्थात् असली बंटवारा स्त्री –देह का ही हुआ है। राजाओं ने अपनी वीरता केवल स्त्री–देह पर ही दिखाई है। यदि स्त्री वैसे प्राप्त न हुई तो किसी भी प्रकार का बल–छल करने से वे नहीं चूके। विष्वमित्रा जैसे तपोबल सम्पन्न दृषि ने भी स्त्री–देह के लिए अपनी तपस्या भंग कर दी। मनुष्य का शोषण के विरूध विद्रोह करना स्वाभाविक है। स्त्री भी आखिर मनुष्य ही है। अतः उसने भी धीरे–धीरे अधिकारों को पहचाना तथा पितृ सत्ता का विद्रोह किया। स्त्री की हीनता को व्याख्यायित करते हुए ऐंजिल्स ने यह कहा है कि आर्थिक दृष्टि से स्वतन्त्रा एवं सम्पन्न होने के कारण पुरूष ने मातृ सत्तात्मक परिवार को पितृसत्तात्मक परिवार में बदला। स्त्री को जब तक आर्थिक क्षेत्र में पुरूषों के समान अवसर नहीं मिलते, तब तक वह पूर्ण रूप से स्वतन्त्रता नहीं हो सकती। आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होने के कारण ही पुरूष ने स्त्री पर अपना आधिपत्य जमा लिया और वह दास्ता की बेड़ियों में जकड़ती चली गई। 19वी सदी में स्त्रीयों ने पितृसत्तात्मक सत्ता का विरोध किया तथा नारी–मुक्ति में स्वर खुलकर सुनाई देने लगे। उन्नीसवीं शब्तादी का सबसे सकारात्मक पक्ष यह रहा है अब अन्य सुधारों की चर्चा के साथ सुधारकों का ध्यान स्त्री–सुधार की ओर भी गया। सुधारकों का ध्यान उन अषिक्षितों, गंवारिनों की तरफ भी आया जो माता है, जननी है। बालक का सुधार घर से ही हो सकता है और इसलिए उसे जीवन का प्रथम पाठ पढ़ाने वाली माता का सुधार आवष्यक जान पड़ा। अतः समाज के जागरूकों द्वारा स्त्री षिक्षा की बात उठाई गई।

स्त्री–विमर्ष का इतिहास :–

स्त्री–विमर्ष का सूत्रापात पष्चिम से माना जाता है। आधुनिक नारीवाद के सिद्धान्त का पहल मील का पत्थर पहली बार 1946 में फ्रांसीसी में 1953 में अंग्रेजी में प्रकाषित 'सीमोन द बोउवार' की कृति 'द सेंकड सेक्स' थी। 'द' सेकेंड सेक्स ने दर्षन–षास्त्र, इतिहास, मनोविज्ञान और मानव–षास्त्र का सहारा लेते हुए यह स्थापित किया कि स्त्रियों का दमन इतिहास और संस्कृति की उपज है और इसे एक प्राकृतिक प्रकिृया नहीं समझा जा सकता। सीमोन द बोऊवार का कथन है औरत पैदा नहीं होती बना दी जाती है। पाष्चात्य जीवन पति में जिस व्यक्ति स्वतंत्रता का षिलान्यास हुआ तो अमेरिका में स्वतन्त्रता संग्राम, नंस की राज्य क्रांति नीदरलैंड, इटली, जर्मनी की समाज क्रांतियों ने विष्वव्यापी चेतना को जगाया तो भारत में भी पुरूषों के साथ नारी विचारकों ने नारी–सम्बन्धी न केवल नए सिद्धान्त प्रतिपादित किए, बल्कि नारी के यथार्थ को भी प्रस्तुत किया। 1930 में पहली बार स्त्रीयें ने भारतीय स्वतंत्रता–संग्राम में प्रत्यक्षतः भाग लिया, हालांकि गाँधी जी इसके विरूध थे वे चाहते थे कि उसके नमक–आंदोलन में स्त्रीया, नेपथ्य में रहे और पिकेटिंग, चरखा कातने जैसे नारी सुलभ कार्य संभाल कर पुरूषों को सहयोग दें। किन्तु मारग्रेट कजिन्स, कमला देवी चट्टोपाध्याय, सरोजनी नायडू आदि प्रबु महिलाओं ने इस बात पर विरोध उनका विरोध किया और अन्त में सफलतापूर्वक सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग भी लिया। गाँधी जी तथा अन्य नेताओं के जेल चले जाने पर सरोजिनी नायडू ने ही आंदोलन का कुषल नेतृत्व किया। इस आंदोलन में सरोजिनी नायडू सहित 800 महिलाएं बंदी बनाई गई थी। महिलाओं के इस योगदान से प्रभावित होकर ही इसके ठीक एक वर्ष बाद 1931 में कांग्रेस के कराची अधिवेषन में स्वतंत्रता

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-1(A)| January - 2026

भारत के संविधान पर विचार हुए स्त्री–पुरूष समानता के सिद्धान्त को सम्मिलित करने की बात उठाई गई थी। इससे स्त्रीयों के दृष्टिकोण में परिवर्तन आना स्वाभाविक था। प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने स्त्री को पुरूष से भिन्न कोई लिंग मानने की अपेक्षा यह मानने पर बल दिया है। औरत–मर्द के फर्क में न पड़कर मैंने अपने आप आपको हमेषा इंसान सोचा है। शुरू से जानती थी मैं हर चींज के काबिल हूँ। कोई समस्या हो मर्दों से ज्यादा अच्छी तरह सुलझा सकती हूँ इसलिए मैंने अपने औरत होने को कभी कमी के पहलू से नहीं सोचा 1829–1956 की सवा सौ साल की लम्बी अवधि में नारी ने अपनी स्थिति में परिवर्तन लाने के लिए अथक् संघर्ष किया है। हिन्दू कोड बिल का पास हो जाना वास्तव में भारतीय नारी की अपराजेय संघर्ष–षक्ति का सूचक है। जिसका मूल कारण है नारी की कर्मठता, नारी की प्रबलता। यही उसकी सफलता की पहली सीढ़ी भी है। स्त्री–विमर्ष के इतिहास में महिला संगठनों का बहुत बड़ा योगदान है। राष्ट्रीय महिला आयोग तथा राज्य महिला आयोगों का गठन महिलाओं के संगठित प्रयासों की सुखद परिणति माने जा सकते है।अतः इस सच्चाई को इंकार नहीं किया जा सकता कि महिलाएँ जिनती गति से अधिकार सम्पन्न और आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी बनेंगी उसी गति से समाज में उनका दर्जा बढ़ेगा तथा उनके प्रति अन्याय एवं शोषण में कमी आएगी।

साहित्यिक परिप्रेक्ष्य में स्त्री –विमर्ष :–

साहित्य व समाज निर्माण प्रक्रिया दोनों साथ–साथ चलने वाली प्रक्रियाएँ हैं। समाज से ही साहित्य का निर्माण होता है। साहित्य में चल रहे स्त्री–विमर्ष, महिला–सषक्तिकरण एवं नारी अस्मिता का प्रष्न फैषन नहीं है, वरन् परम्परा और अमानुषिक बोध का सतत् चलने वाला द्वन्द्व है। जब स्त्री अपने व्यक्तित्व हेतु संघर्षरत होती है तो उसमें चेतनमन की संकल्पात्मक भूमिका और अवचेतन मन की इच्छा शक्ति होती है। सदियों से अवस्थित एक परम्परा व सुदृढ़ व्यवस्था को तोड़ना और जन संघर्ष से जुड़ कर पग–पग पर यथार्थ के थपेड़े खाना ही अस्मिता की पहचान है। विष्व की लगभग सभी सभ्यताओं व संस्कृतियों में स्त्री की भूमिका दोयम दर्जे की रही है। उसके सभी मानदण्ड पुरूषों द्वारा निर्धारित किये जाते हैं। स्त्री–विमर्ष को साहित्यिक परिप्रेक्ष्य में देखने पर सबसे पहले नंस की महान लेखिका 'सीमोन द बोउवार' का नाम आता है। सीमोन ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'द सेकंड सेक्स' में लिखा है। स्त्री पैदा नहीं होती, बल्कि उसे बना दिया जाता है। स्त्री जन्म से अत्यन्त बुद्धिमान और शक्तिवान होती है पर पुरूष उसे शनैः–षनैः अपने अधीन करता रहता है, उसे अपने मातहत बनाता–बनाता उसकी समूची शक्तियाँ क्षीण कर देता है। स्त्री को पुरूष सदैव एक ही षिक्षा देता है कि वह उससे हीन है, दीन है। इस तरह वह उसे अपनी दासी बना लेता है। उसे परिपक्व होने तक अनवरत रूप से उसके मस्तिष्क में भरा जाता है कि तुम्हें अपने परिवार, पति, स्वामी और बुजुर्गों की आज्ञा मानकर महानद्ध बनना है। साहित्य की दुनिया में कहानी, कविता आदि के क्षेत्र में अनेक ऐसी रचनाएँ लिखी गयी, जिनमें स्त्रियों के अधिकारों से सवाल को गंभीरता से उठाया गया है तथा उन्हें पुरूषों के बराबर हक देने की माँग की गयी है। खासकर रघुवीर सहाय, रांगेय राघव, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, मृदुला गर्ग, मंजुल भगत, मृणाल पाण्डेय, चित्ता मुद्गल, प्रभा खेतान, गीतांजलि श्री, अनामिका, मैत्रौयी पुष्पा, काल्यायनी आदि कई ऐसी रचनाकार हैं, जिन्होने सामाजिक और राजनीतिक सत्ता में स्त्रियों की भागीदारी के सवाल को गंभीरता के साथ उठाया है।नारी कविता में रघुबीर सहाय यहाँ तक कहते हैं कि समाज में नारी की दुर्दषा का सबसे बड़ा कारण पुरूषवाद है जो उन्हें सदियों से अपने अधीन रखता आया है। नारी बिचारी है। पुरूष की मारी है। तन से क्षूधित हैं मन से मुदित है। लपककर झपक्कर। अंत में चित्रा हिन्दी कथा साहित्य में प्रेमचंद के उपन्यास 'सेवासदन' की पात्रा सुमन पहली स्त्री है, जिसमें विद्रोह का स्वर मुखरित होता है।इसके बाद जैनेन्द्र, जयषंकर, इलाचंद जोषी,उपेन्द्रनाथ अष्क और अज्ञेय द्वारा स्त्री–अस्मिता को अपने–अपने ढंग से प्रस्तुत किया गया है।जिससे साहित्य में स्त्री–विमर्ष मानवीय चिंतन के रूप में नये आयाम और ऊँचाइयां लेने लगा।

निष्कर्ष

पुरूषवादी विचार धाराओं से आज की नारी मुक्ति चाहती है। इसके लिए नारी को स्वयं सिद्धा बनकर, अपनी भीरूता से, अपनी अज्ञानता से अपनी अषिक्षा से, अपनी जड़ता से, सडीगली मैली हो चुकी रूढ़ियों से मुक्त होने का प्रयास करना होगा। नारी विमर्ष के साथ नारी सषक्तिकरण की बाते भी उठ कर सामने आ रही है। नारी विमर्ष विचार धारा है। बदलते समय में बदलती दृष्टि से हमे सोचने की आवष्यकता है। यह समय कुछ जर्जर और रूढ़ परंपराओं से मुक्त होने का है। एक संतुलनात्मक लचीलापन और आधुनिक सोघ्र ही पितृसतात्मक सोघ्र एवं विकास के लिए षिक्षा जरूरी है। नारी विमर्ष बहस का मुद्रा नही जागृति का मुद्रा है। हमें यह स्वीकारना होगा कि नारी एक जीवंत सत्ता है। गतिषील समाज के लिये नारी की भूमिका और उसके दृष्टिकोण उसकी सुरक्षा और उसके सषक्तिकरण पर विचार होना चाहिए तभी नारी–विमर्ष सार्थक सिद्ध होगा।

संदर्भ सूची

1- मुक्त, त्यागी :– समाकालीन महिला उपन्यासकायें के उपन्यासों में नारी विमर्ष, अमन प्रकाषन, कानपुर, 1986 पृ. 70
2- नसरीन, तसलीमा :– नष्ट लड़की नष्ट गध, मुनमुन सरकार, वाणी प्रकाषन दिल्ली, 1990 पृ. 76
3- खेतान, प्रभा :– नारी उपेक्षिता, वाणी प्रकाषन दिल्ली ,1986 पृ. 70
4- अग्रवाल, रोहिणी :– हिन्दी उपन्यास में कामकाजी महिला, रामकमल प्रकाषन नई दिल्ली, 1986 पृ. 28
5- यादव, राजेन्द्र :– आदमी की निगाह मे औरत, राजकमल प्रकाषन, नई दिल्ली, 2010 पृ.28
6- शर्मा, रोमी :– भारतीय महिलाएँ की नई दिषाए, लोक प्रकाषन, इलाहाबाद, 2008
7- पांडे, मृणाल :– परिधि पर नारी राधा कृष्णा प्रकाषन, नई दिल्ली, 1993 पृ. 47
8- कुमार, राधा :– नारी संघर्ष का इतिहास, वाणी प्रकाषन, नई दिल्ली, 2011 पृ. 126
9- राय, प्रवीण :– क्यों महिलाए निर्णायक भूमिका में नहीं, हिल पब्लिकेषन, नई दिल्ली,
10- शर्मा, रेखा :– दलित महिलाएं एवं मानवाधिकार, रावत प्रकाषन अंसारी रोड़ दनियागंज, नई दिल्ली, 2012 पृ.41